Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi gen. 40/2

13. D. 82 (1)

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Pali.

Varṇaprakāśikā

Pt. II.

Baranperkashka 2nd Part.

वर्णप्रकाशिका

दूसरा भाग

जो

मुफ़ीदउल्मुब्तदी हिस्से पहले से कि अवधदेशीय देहाती
पाठशालाओं के लिये नार्म्मल स्कूल लखनऊ में
रचा गया था

श्रीयुत जान, सी, नैस्फ़ील्ड साहब एम, ए, इन्स्पेक्टर
वीरेश सर्रिश्ते तालीम अवध की
आज्ञानुसार
श्रीयुत राय दुर्गाप्रसाद साहब बहादुर असिस्टण्ट
इन्स्पेक्टर मदारिस अवध सर्किल के इहतमाम से
तर्जुमा होकर
श्रीमद्विद्यासम्पन्न श्री साहब डैरेक्टर आफ़ पब्लिक
इन्स्ट्रक्शन् वीरेश पश्चिमोत्तर देशीय व अवध की
आज्ञानुकूल

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी
जून्वर्ष सन् १८८३ ई०

वर्णप्रकाशिका

दूसरा हिस्सा

फ़िक़रे

अब जा तू या वह है ख़त लिख घिस जा
पी लो घी खा सो लो हम को दो तू थम जा

जुमले

घर जाकर ख़त ला इस को पढ़ दिल देकर सुन तू कुछ न
कह इस को कह दो तू घर को चल हम से ले ले इस को दे दे

लफ़्ज़

आज बाग़ बात पास जान हाल
रात साथ काम माल नाम हाथ

लफ़्ज़

बोल भूल फूल तोल जोड़ चोट
छोड़ दूर जोर कूद खोर मोड़

लफ़्ज़

भीड़ पीठ तीर ठीक जीत झील
चीज़ छीन शेर कील खेत नेक

जुमले

आप का क्या काम है नेक चाल चलो तोल में कम मत तो
लो सूम की चीज़ मत छू रात को फूल मत तोड़ मोर बाग़ में छोड़

लफ़्ज़

बरस बड़ा पकड़ झपट चलो ख़बर डपट रगड़
सबक़ ग़लत क़लम कमर लचक मटर निकल हवा

लफ़्ज़

बैल तरबूत ठहर दर्द दीन डंक रंग
सुस्त सैर शहर इल्म अक़्ल सर्द मुल्क नर्म

जुमले

इल्म से अक़्ल साफ़ होती है इल्म की बला भूल है

ख़ुदा का ख़ौफ़ कर झूठ मत बोल
धरम पर चलो सुस्त मत रहो

हिकायत

एक शेर ने एक मूशा को पकड़ा मूशा ने कहा मुझे छोड़ दो तब शेर ने उसको छोड़ दिया तीन दिन के बाद शेर एक जाल में फँस गया उस वक़्त मूशा ने उस के पास आकर जाल को काट कर शेर को बचा दिया सच है नेक होने का यही फल है ॥

लफ़्ज़

बाहर पण्डित तख़्ती टुकड़ा गङ्गा यमुना चौड़ा छुरी हाकिम ख़ुशी दोस्त डोरी रुई ज़मीन सर्दी शादी साहब ग़रीब काग़ज़ गोरा घोड़ा लम्बा मकान

जुमले

सुस्ती से हर्ज होता है दुनिया की ख़ुशी में ग़म मिला है हाकिम का हुक्म दिल से मानो पण्डित साहब को

सलाम कह दो तख़्ती पर मोटे क़लम से लिखो उस-
की डोरी से पानी भरो उस ग़रीब का खेत बचाओ इस
ज़मीन पर बहुत से कुल्हा हैं गंगा यमुना प्रयाग में मि-
ली हैं दोस्त की शादी में चलो ॥

हिकायत

एक बन्दर मुँह में रोटी लिये दरिया पार जाता था पानी
में रोटी का साया देख कर उसे लेने को मुँह खोला जो-
रोटी मुँह में थी वह पानी में गिर पड़ी तब बन्दर बोला हाय
हाय लालच बुरी बला है ॥

लफ़्ज़

इनाम बीमार तालाब जानवर दहलीज़ हवेली
रोशनी ज़ंजीर सन्दूक़ कंजूस गाँव गेहूं
लोमड़ी लड़ाई मिठाई हमेशह ॥

जुमले

माबाप की बातें माना करो मदर्से में हमेशह वक़्त पर
आया करो ज़ोरावर जानवर होता है उन की दहलीज़

पर न जाओ तालाब पर बड़ी सरदी है ग़रीब परलोग रहम करते हैं दिल में कुछ ग़म न करना चाहिये गूंगी ज़बान झूंठी ज़बान से बेहतर है ॥

हिकायत

जब सूर्य्य सुबह को पूरब की तरफ़ से उदय होता है उस तरफ़ को पूरब दिशा कहते हैं और शाम को पश्चिम की तरफ़ अस्त होता है तो उस तरफ़ को पश्चिम दिशा कहते हैं और किबूल: का रुख़ भी कहते हैं जब कोई आदमी जिधर से सूर्य्य निकलता है उस तरफ़ मुंह करके खड़ा रहे तो उसके सामने पूरब और पीठ की तरफ़ पश्चिम और सीधे हाथ की तरफ़ दक्षिण और बाँये तरफ़ उत्तर होता है पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर यह चार दिशा दुनियां की हैं और उनके बीच में चार कोने याने नैऋत्य वायव्य आग्नेय और ईशान हैं जब यह समझने लगे तो नक़्शः मुल्क का आसानी से समझ में आयेगा हिन्दुस्तान के नक़्शे में पूना शहर देखो उसके पूरब की तरफ़ है हैदराबाद दक्षिण पश्चिम की तरफ़ बम्बई दक्षिण की तरफ़ सितारह और उत्तर तरफ़ अहमद नगर है ऐसा साफ़ नज़र आता है जिस कोने की

तरफ़ हवा चलती है उसको वायव्य कहते हैं॥

यह रुबाई बरज़बान याद करना-रुबाई

इस्ट पूरब है इसको मशरिक़ जान। वेस्ट पश्चिम है इस को मग़रिब मान। सौथ दक्षिण जनूब को कहना। नार्थ उत्तर शिमाल को पहिचान॥

देखो तो सूर्य्य पश्चिम में अस्त होता है तो कुछ नज़र नहीं आता जो मुल्क ज़मीन के उस तरफ़ हैं वहाँ अब दिन का उजाला नज़र आया होगा हमको यहाँ अँधियारा हो गया अब फिर जब रात गुज़र जायगी तो सुबह को पूरब की तरफ़ आफ़ताब की सूरत दिखाई देगी॥

लफ़्ज़

अच्छा	बच्चा	भद्दा	पत्ता	ठट्ठा
छप्पर	हुक्कः	धब्बा	डब्बा	ढर्रः
रत्ती	सिक्कः	ग़ल्लः	कच्चः	कल्लः

जुमले

ठट्ठा करना अच्छा नहीं होता। इस छप्पर में बड़ा बच्चा लगा है। जुर्रः एक शिकारी चिड़िया है। उसके पड़

पर धब्बा पड़ा है। यह डब्बा भद्दा बना है। बारबार झुकः पीना बुरा है। आठ रत्ती का एक मासः होता है॥

हिकायत

किसी चिड़ीमार ने एक जुर्रः पकड़ा जुर्रः बोला ऐ चिड़ीमार मैं तुम्हें दो बातें बताता हूं याद रक्खो एक यह कि हर एक की बात को मान लेना न चाहिये और दूसरे यह कि जो चीज़ हाथ से जाती रहे उस का शोच न करना चाहिये सुनो ऐ चिड़ीमार मेरे पेट में बड़े मोल का एक हीरे का टुकड़ा है अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं वह तुम्हें देदूं चिड़ीमार ने यह सुन कर उसे छोड़ दिया तब जुर्रः उड़ कर एक पेड़ पर जा बैठा और बोला अरे चिड़ीमार तू ने थोड़ी ही देर में मेरी पहली बात भुलादी यह न जाना कि जो मैं हीरा खाता तो कैसे जीता रहता तब चिड़ीमार शिर पीटने लगा फिर जुर्रः बोला ऐ चिड़ीमार क्या तू ने मेरी दूसरी बात भी भुलादी जब हाथ से चीज़ निकल गई तब क्या शोच करना इतना कह कर जुर्रः उड़ गया॥

लफ़्ज़

अंगरखा बहादुरी भटियारह पटवारी तम्बाकू
चबूतरह हलवाई दरवाज़ह रोज़गार ज़मींदार
अलमंद क़लमदान कारीगर मज़दूरी होशियार

जुमले

भाई साहब अंगरखा पहन कर मदर्सह चलो पट-
वारी से कहो कि ज़मींदार के तालाब का सिंघाड़ाह मेरे
पास भेज देवे दरवाज़े पर हलवाई को बिठा कर मिठाई
बनवा लो इस वक़्त बाजार में बड़ी भीड़ है इस क़लम-
दान को किसी कारीगर बढ़ई से बनवा दीजिये वाहवाह
आप बड़े होशियार हैं यह सौदागर दूशाले का रोज़गार
बहुत दिनों से करता है आप ने फ़ैज़ाबाद के क़लमदान
के लिये कहा था सो मैं लाया हूं ॥

हिकायत

एक मुर्ग़ और एक गधा दोनों मिल कर जंगल में
चरते चुगते थे इतने में एक भूका शेर गधे की तरफ़ झपटा

गधा मारे डर के काँपने लगा मुरग़ गधे को यह हाल देख कर बड़ी बहादुरी से बाँग देने लगा शेर मुरग़ की आवाज़ सुन कर फिर चला गधा यह समझा कि शेर डर गया और शेर का इतना पीछा किया कि दोनों मुरग़ की आवाज़ की पहुँच से बाहर निकल गये तब शेर ने पीछे फिर कर उस अहमक़ गधे को मार डाला ॥

लफ़्ज़

अंगरेज़ी	बिस्वांसी	जुग़राफ़िया	रोशनाई
सन्दूक़चः	ज़रूरयात	तालिबइल्म	फ़ैज़ाबाद
कारख़ानः	काश्तकार	मेहरबानी	नस्तालीक़

जुमले

अंगरेज़ी पढ़ने से अच्छी नौकरी मिलती है। जुग़राफ़ियः से ज़मीन का हाल मालूम होता है। पटवारी की माप में एक दो बिस्वांसी घटबढ़ जाती हैं। सब हरफ़ों में नस्तालीक़ ख़ूब सूरत होता है। तालिबइल्म को नस्तालीक़ की मश्क़ करना ज़रूर चाहिये एक सन्दूक़चह फ़ैज़ाबाद से मँगवा दीजिये मेरी दावात में अपने -

कारख़ाने से अच्छी रोशनाई भरवा दीजिये काश्त-कार पर हाकिमों की बड़ी मेहरबानी रहती है॥

हिकायत

एक वक़्त मेढ़कों और चूहों के बादशाहों में एक झील की हकूमत के लिये बड़ी लड़ाई पड़ी थी बढ़ते बढ़ते यहाँ तक बढ़ी कि दोनों बादशाह आपस में बड़ी बहादुरी से कुश्ती लड़ने लगे इतने में एक चील दोनों पहलवानों पर टूट पड़ी और दोनों को उठा ले गई और बरसों का झगड़ह एक दम में मिटा दिया॥

फ़स्ल

एक बरस में तीन फ़सलें होती हैं-जाड़ा-गरमी और बरसात-कार्त्तिक-अगहन-पूष-माघ-जाड़े के महीने हैं-फागुन-चैत-बैशाख-ज्येष्ठ-गरमी के महीने हैं-असाढ़-श्रावन-भादों-क्वार-बरसात के महीने हैं-असाढ़ से अगहन तक खरीफ़ की फ़सल है-ज्वार-धान और उड़द खरीफ़ के अनाज हैं-पूष से ज्येष्ठ तक रबीअ़ की फ़सल है-गेहूं-चना-जौ-रबीअ़ के अनाज हैं॥

हिकायत

किसी शहर में एक वज़ीर और एक बनियाँ दोनों रहते थे बनिये के लड़के रात दिन आलिमों के साथ में रह कर होशियार हो गये और वज़ीर के लड़के हरवक़्त जाहिलों की सोहबत में रह कर जाहिल हो गये इत्तिफ़ाक़ से उस शहर में बड़ा काल पड़ा तो वज़ीर और बनिये के लड़के अपना अपना घर छोड़ किसी दूसरे मुल्क को निकल गये वहाँ बनिये के लड़के इल्म की बदौलत वज़ीर हो गये और वज़ीर के लड़के अपनी जिहालत से दुकान दुकान भीख माँगने लगे सच है सोहबत में बड़ा असर होता है ॥

हिकायत

चालीस बरस की उमर में एक आदमी को लिखने पढ़ने का शौक़ हुआ अगर्चे मिहनत बहुत करता था लेकिन बसबब ज़ियादह उमर और कड़ी ज़बान के साफ़ लफ़्ज उसके मुँह से नहीं निकलते थे एक रोज़ ना उम्मेद हो कर कुयें में डूबने चला तो क्या देखता है

कि कुयें के पत्थर में रस्सी की रगड़ से निशान पड़ गये हैं तब उसने अपने दिल में ख़्याल किया कि पत्थर सी कड़ी चीज़ तो रस्सी सी नरम चीज़ से घिस जावे हमारी चमड़े की ज़बान क्या हर्फ़ों की रगड़ से न घिसेगी इतना शोच कर वह फिर आया और पढ़ने लिखने में फिर मेहनत करने लगा ऐसी मिहनत की कि थोड़े ही दिनों में बड़े बड़े पण्डितों से ज़ियादह विद्वान् हो गया॥

हिकायत

एक ज़मींदार के दो लड़के - दुर्गन्धी और सुगन्धी थे दुर्गन्धी हमेशः देर को सो के उठता था और बग़ैर हाथ मुँह धोये मैले कपड़े पहने मैले लड़कों के साथ खेला करता था और खाने पीने में परहेज़ नहीं करता था और रात को तंग मकान में सोया करता था सुगन्धी हमेशः सुबह उठकर हाथ मुँह धो अच्छा खाना खा उजले कपड़े पहन ऐसी जगह उठता बैठता सोता था जहाँ अच्छी साफ़ हवा आती थी आख़िर को यह हुआ कि दुर्गन्धी थोड़े ही दिनों में बहुत बीमार होकर मर गया और सुगन्धी उमर भर चैन में रहा - नतीजः ऐ-

लड़को तुम भी जो सुगन्धी की तरह चैन में रहा चाहो तो सुबह उठकर हाथ मुँह धोकर कंघी से अपने बालों को साफ़ किया करो और हमेशः उजले कपड़े पहना करो जहाँ बदबू होती हो वहाँ हरगिज़ न जाओ भीड़ में मत बैठो वहाँ तुम्हारा दम रुकेगा हमेशः साफ़ ताज़ी हवा में दम लो छोटी कोठरी में बहुत आदमी इकट्ठा न बैठा करो ॥

हिकायत

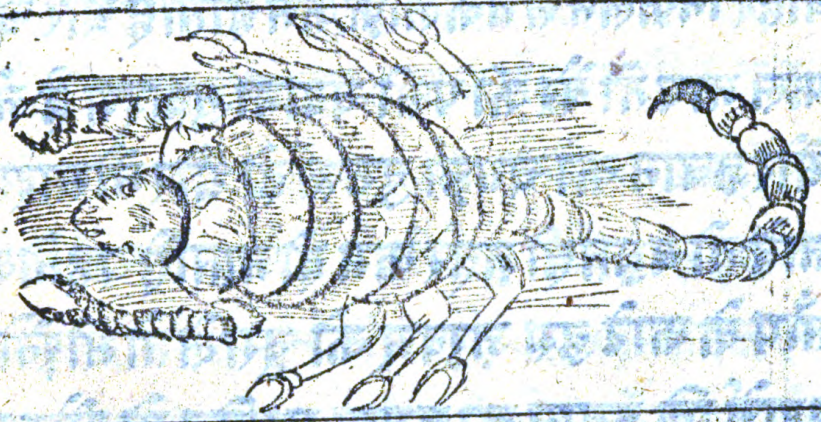

बाज़ बिच्छू छोटे और ऊदे रंग के और बाज़ बड़े और काले होते हैं उनके आठ पाँव और दो आँकड़े और एक डंक होता है जिसके पीछे ज़हर का कीड़ा रहता है और यह अक्सर पत्थर और ज़मीन के नीचे अँधेरे और सायः में छुप रहता है और बहुत चलने वाला होता है

दौड़ते वक़्त डंक को पीठ पर रख लेता है और कीड़े उस की ख़ूराक हैं वह कीड़ों को आँकड़े से पकड़ के पीठ पर मरोड़ कर अपना डंक मारता है जब वह मरजाते हैं तब उनको खाता है आदमियों को भी जो कभी डंक मारता है तो उसका ज़हर उन के बदन की रग व पट्ठे में पहुँच कर निहायत तकलीफ़ देता है बल्कि बायसमौत होजाता है इस वास्ते चाहिये कि जो बिच्छू किसी को डंक मारे तो उसी जगह के ज़ख़्म को मुँह से चूस ले क्योंकि ज़हर बाहर निकलने से तकलीफ़ कम होती है और अगर मुँह फल जाय तो बेर की पत्ती चबाना मुफ़ीद है जो होंट और ज़बान का चमड़ा दुरुस्त हो और नौसादर लगाया जावे तो बहुत ही ज़हर कम होजाता है यह तो क्या अगर साँप के काटे हुए ज़ख़्म को चूस ले तो भी ख़ौफ नहीं बशर्ते कि ज़बान का चमड़ा साबित हो और उस पर नौसादर पानी में मिला कर लगाया जावे तो ज़हर असर न करेगा क्योंकि ज़हर की तासीर ख़ून पर ज़ियादह होती है मगर चमड़ा साबित और दुरुस्त हो तो ज़हर का असर ख़ून पर नहीं पहुँचता है। इसलिये उसका दर्द नहीं होता॥

हिकायत

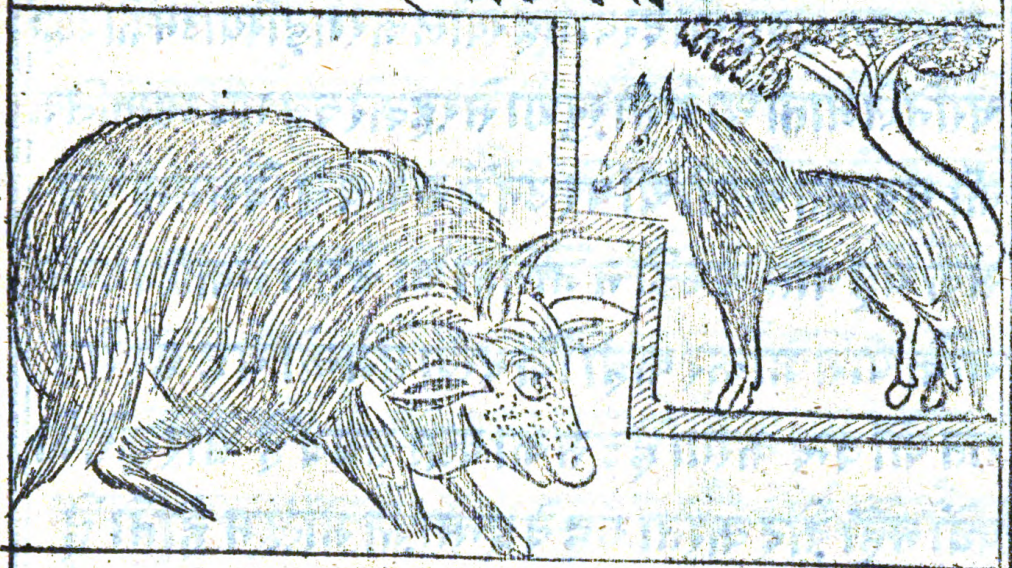

कहते हैं कि किसी वक़्त में एक गड़रिये के पास बहुतसी भेंड़ें और बच्चे थे वह हरतरह उनकी परवरिश करता था और हरी भरी घास चराने के वास्ते उनको चरागाहों में ले जाता था और साफ़ मीठे पानी से उनको ताज़ह करता था - और थकी माँदी भेंड़ को कन्धे पर चढ़ाकर ऊपर पहुँचाता था छोटे छोटे बच्चे भी चरने को उनके साथ जाते थे जब शाम होती थी तो वह अपने ग़ल्ले के ख़ुश करने को बाँसुरी बजाता था इस तरह वह अपनी भेंड़ों को ख़ुश रखता था कि ऐसी किसी की भी नहीं रहती थीं लेकिन रात के वक़्त गड़रिया उन सबको एक बाड़े में बंद कर देता था और दरिंदों की दहशत से एक कुत्ता उनकी

निगहबानी को रखता था और वह ग़ैर आदमियों पर भूंका करता था सुबह को दरवाज़ह खोल कर गड़रिया उनको बाहर चराने ले जाता था ऐसी ख़ुशी से रहकर वह सब उस मालिक की मुहब्बत करती थीं पर उन में एक बच्चः बेसमझ अहमक़ यह बात अच्छी न जानता था उसने एक दिन अपनी माके पास जाकर कहा कि देखो हम को यह हर रोज़ रात को बन्द करता है इस का क्या सबब है और कुत्ते को क्यों नहीं क़ैद करता यह बेइन्साफ़ी मालूम होती है मैंने आज यह तजवीज़ किया है कि अगर भागने की फ़ुरसत मिले तो भाग जावें कि आज़ादी बेहतर है और चांदनी रात का फिरना निहायत आनन्ददायी है उसकी मा निहायत अक़्लमन्द थी बोली कि ऐ मेरे प्यारे बेटे तू बड़ा अहमक़ और नादान है तुझे कुछ समझ नहीं बाड़ा का रहना बहुत मुनासिब है कि वह हमारे तेरे और सब के लिये रात को अमन चैन की जगह है मालिक की यह मेहरबानी है कि इसके सिवा कुत्ते को भी निगहबानी के लिये दरवाज़ह पर बिठा रक्खा है उसका हुक्म मानना लाज़िम है अगर तू रात को अकेला बाहर जायगा तो ज़रूर मारा जायगा उसने कहा कि मुझे

तो यही बेहतर मालूम होता है आख़िर को जब उस दिन
रात को बाड़े में जाने को गड़रिये ने बुलाया सब भेड़ियाँ गईं
और बाड़ह में आराम से सोईं लेकिन यह अहमक़ बाहर
किसी झाड़ी में छुपकर बैठ रहा और वहां अपनी आज़ादी
और ख़ुद मुख़्तयारी को ख़्याल करके ख़ुशी की हालत
में उछलने और कूदने लगा फिर वहाँ से जंगल की तरफ़
गया थोड़े अर्से के बाद एक बड़ा भेड़िया उस जंगल से
बाहर निकल कर चिल्लाने लगा उसकी डरौनी सूरत देख
और ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनकर उस अहमक़ के हाथ
पाँव फूल गये और अपनी ख़ुद मुख़्तयारी का अफ़सोस
करने लगा मगर बाड़ह के दूर होने से इस फ़िक्र में था
कि मैं क्या करूं और किस तरह अपनी मांतक पहुँचूं जो
इस सहम नाक बला से जान बचे - कि एका एक उस
भेड़िये की नज़र उस पर पड़ी और झपट कर उसको शिकार
किया और अपने बच्चों की ख़ूराक के वास्ते ले गया -
नसीहत - मालूम करना चाहिये कि जो वह भेड़ का बच्चा
अपनी अक़्लमन्द मा की बात मान कर अपने मालिक
का ताबेदार रहता तो वह मारा न जाता इसलिये ऐ
लड़को तुम को चाहिये कि अपने मा बाप और उस्ताद

का हुक्म कान धर के सुनो और हर एक बात को जो वह तुम से कहें बेहतरी के साथ अमल में लाओ क्योंकि नेक बात का करना सबब इज़्ज़त और आबरू का होता है और आराम व चैन भी मिलता है अगर तुम ज़िद करोगे तो कभी तुम को भी ऐसी सख़्त मुशकिल पड़ेगी ॥

हिकायत

किसी दिन एक लड़का अपने मामू के घर गया उस के मामा ने दो तसवीरें मिट्टी की देकर कहा ऐ गोपाल आज मैं सफ़र को गया था वहाँ से यह दो तसवीरें लाया हूं एक तुम्हारे वास्ते और दूसरी तुम्हारी बहनमनी के लिये उस ने कहा दोनों में से मेरी कौनसी है और मनी की कौनसी है मामू ने कहा कि यह दोनों बराबर हैं जो चाहो एक तुम लो दूसरी मनी को दो गोपाल दोनों तसवीरें लेकर अपनी मा को दिखाने आया पर दौड़ दौड़ कर रास्ते में चलने से ठोकर खाकर गिरा कि एक तसवीर टूट गई उस के सब टुकड़े दामन में उठा कर घर लाया और पहुँचते ही गोपाल ने अपनी तसवीर और वह टूटी तसवीर मा को दिखा कर कहा कि अम्मा देखो यह कैसी अच्छी तसवीर

है मेरे मामू ने मुझको दी है और मनी के वास्ते भी ऐसे-
ही तसवीर दी थी लेकिन वह टूट गई उसके टुकड़े जमा
कर लाया हूं मनी को दूंगा मा ने कहा कि यह टूटी तस-
वीर मनी की क्यों कर हो सक्ती है गोपाल ने जवाब दिया
कि मामू ने कहा था कि दोनों तसवीर बराबर हैं इनमें से
जो चाहो एक तुम लो और दूसरी मनी को दो माने हँस
कर कहा कि यह मामू की दी हुई तसवीर इस तरह।
मनी से टूट जाती तो तुम ख़ुश होकर ले लेते गोपाल
सुनकर शरमिंदह हुआ ॥

हिकायत

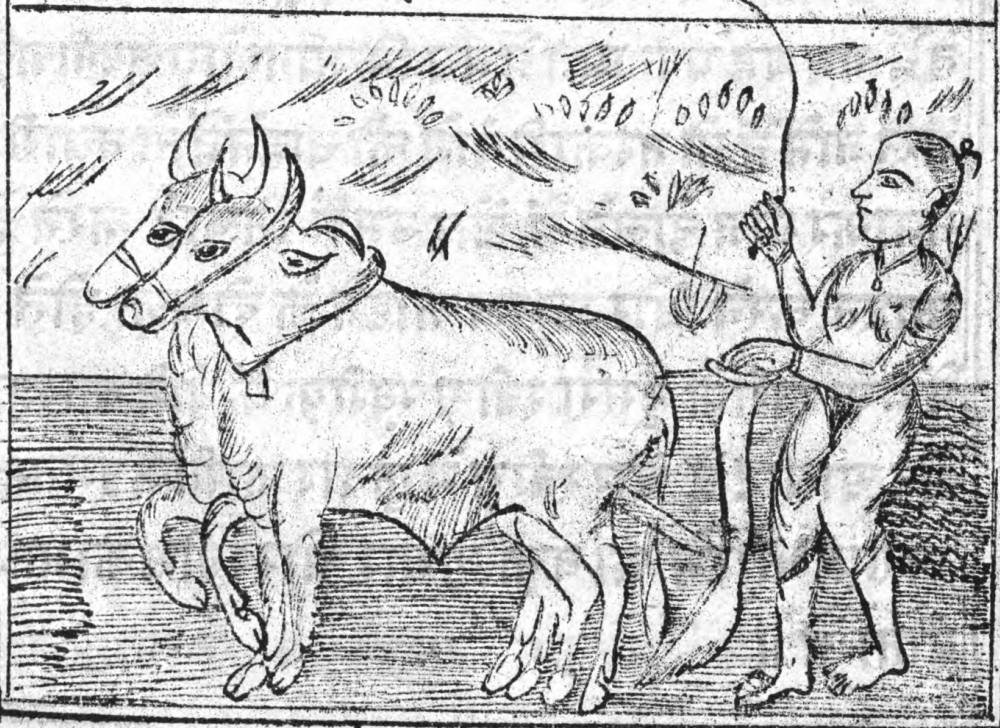

इस सीतल किसान को देखो कि हाथ में हल का डंडा पकड़े है हल लकड़ी से बना है और उस में लोहे की फाल है उस से ज़मीन जोती जाती है हल में बैल जोते हैं बैल की गरदन में जो लकड़ी लगी है उसको जुआ कहते हैं सीतल एक हाथ में बैल मारने को चाबुक लिये है और मुँह से दोबाँ बोलता है बाज लोग हल में भैंसा भी लगाते हैं यूरप में घोड़े जोते जाते हैं खेत में पहले एक दो बार हल चलाकर ज़मीन नरम करते हैं फिर सरावन या पटेला फेरकर ज़मीन को बराबर करते हैं तब उसमें बीज बोते हैं वह तुख़्म आठ दश दिन में उगते हैं चन्द महीने के बाद वह फूलते हैं और फलते हैं जब वह पक जाते हैं तब किसान लोग अपनी बाड़ी में ले जाते हैं जो तरकारी बोने को चाहते हैं तो क्यारी बनाकर बीज डालते हैं और उस में सिंचाई करते हैं काश्त करने और फ़सल काटने के दो वक़्त होते हैं एक ख़रीफ़ दूसरा रबीअ़ ख़रीफ़ के बोने का वक़्त जेठ आषाढ़ है और रबीअ़ में कुवार कार्तिक इस तरह ख़रीफ़ काटने का वक़्त कुआर और रबीअ़ का माघ होता है ॥

हिकायत

सवाल अम्मा आज गोपाल ग्वाल दूध लाया है और पूंछता है कि कितना दूध चाहिये जवाब बेटा कहदो कि आज सेर भर और कल दो सेर सवाल अम्मा ग्वाल कहां से दूध लाता है जवाब तुम जानते नहीं कि उसके घरमें बहुतसी गायें और भैंसें हैं उनका दूध लाता है सवाल अम्मा गौ कितना दूध देती है और। भैंस कितना जवाब एक गाय दो सेर और भैंस चार सेर तक सवाल गोपाल के घर में गायें भैंसे बहुत हैं कि नहीं जवाब दो गायें और चार भैंसे हैं सवाल वह इतना दूध क्या करता है जवाब जिस तरह कि।

वह हमारे यहां दूध लाताहै उसी तरह औरों के घर में।
भी रातिब देकर बाकी बचा हुआ हलवाई के हाथ बेंचता
है सवाल हलवाई दूध क्या करता है जवाब उस
का खोवा पेड़ा बरफ़ी बनाकर बेचताहै सवाल अम्मा
दूध की निसबत पेड़े ज़ियादह मीठे होते हैं दूध तो खाने
में इतना शीरीं नहीं होता उसका क्या सबबहै जवाब
अरे दिवाने तू क्या है भोला नादानहै हलवाई पेड़े में
शक्कर डालते हैं इस सबब से ज़ियादह मीठे होतेहैं॥

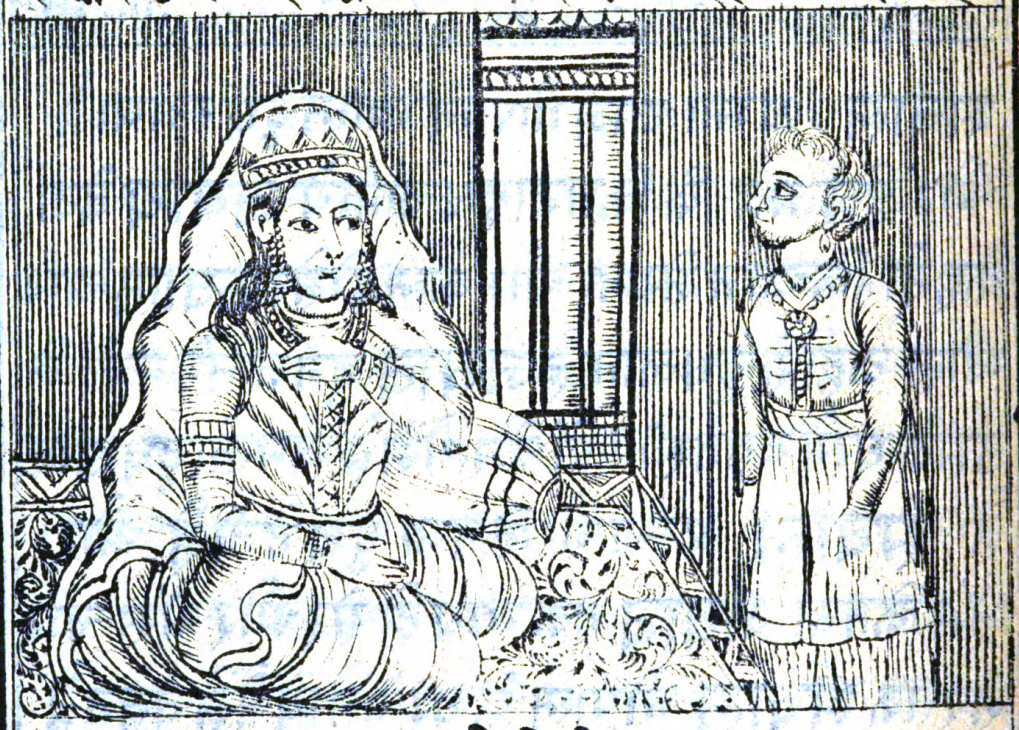

रवत छोटे के नाम

मेरे प्यारे सलामत रहो - दुआ के बाद मालूम हो कि।

बहुत दिनों के बाद तुम्हारा ख़त डाक पर आया तुम्हारे लिखने पढ़ने की ख़बर सुनकर बहुतजी ख़ुश हुआ अब कुछ कुछ अंगरेज़ी भी पढ़ते रहना इससे बहुत फ़ायदा होगा ज़ियादः हुआ - राक़िम रहीम बख़्श लखनऊ से तारीख़ ४ माह अगस्त सन् १८६४ ई०

ख़त बड़े के नाम

जवाब

मेरे जनाब सलामत - बाद तसलीमात के अर्ज़ यह है कि वमूजिब हुक्म आपके मैंने कालिज में अंगरेज़ी शुरूअ करदी बल्कि एक बार इम्तिहान भी दे चुका और उसमें जनाब डैरकर साहब बहादुर ने मुझे एक अच्छी किताब इनाम में दी है - ज़ियादह नियाज़। अरीज़: अमीर अली - बनारस - एकुम जनवरी सन १८६५ ई०

ख़त दोस्त के नाम

मेरे दोस्त सलामत

बाद शौक़ मुलाक़ात के मालूम हो कि हमने सुना

आप अक्सर बीमार रहते हैं सो दोस्त गन्दे मकान में न-
रहना ऐसी जगह रहना जहाँ साफ़ ताज़ी हवा आती
हो बदन और कपड़े हमेशः उजले रखना पानी साफ़
पीना खाने को ऐसी चीज़ खाना जिससे पेट भरे और
जो जल्द हज़म हो और बदन को ताक़त दे मौसम के
मुताबिक़ नई नई चीजें खाना चाहिये और कई चीज़ों
को मिलाकर खाना अच्छा होता है - राक़िम नज़ीर
अली - लखनऊ १४ फ़रवरी सन् १८९९ ईसवी॥

ख़त दोस्त के नाम

जवाब

मेरे दोस्त सलामत

बाद शौक़ मुलाक़ात के मालूम होकि आप का।
ख़त आया जी ख़ुश हुआ मैं इस साल अक्सर बीमार
रहा सो खाने पीने में जो आप के लिखने के मुताबिक़
किया तो बड़ा फ़ायदह हुआ अब कोई बीमारी नहीं
रही - यह आपही की मेहरबानी का फल है॥ राक़िम
महबूब अली - बनारस - १५ अप्रेल सन् १८९९
ईसवी॥

ख़त माके नाम

मा जीव साहब: सलामत - बाद तसलीमात के अरज़ यह है कि एक महीने का अरसः हुआ कि आप ने मेरे इम्तिहान से बहुत ख़ुश होकर फ़रमाया था कि तुझे इनाम दूंगी लेकिन अब तक आपने मेरा इनआम इनायत न फ़रमाया उम्मेदवार हूं कि जल्द इनायत हो- अरीज़: अहमदअली - फ़र्रुख़ाबाद - ७ मई सन् १८६९ ईसवी ॥

ख़त बेटे के नाम

जवाब

मेरे बेटे आँखों के सुख तुम्हारी उम्र ज़ियादह हो- बाद दुआ के मालूम हो कि तुम्हारे लिये इनआम भेजना भूल गई थी सो अब दस रुपय: हाथ रूपा चौकीदार के भेजती हूं रसीद जल्द भेजना - राक़िमे जैबुन्निसा देहली से - १६ जून सन् १८६९ ई०

अर्ज़ी

ग़रीब परवर सलामत

जनाब आली फ़िदवी के छोटे भाई का आज व्याह है और तीन रोज़ तक बिरादरी का खाना होगा इसलिये यह अर्ज़ी हज़ूर में गुज़रान् कर उम्मेदवार हूं कि तीन दिन की रुख़सत बख़्शीजावे ज़ियादहहद अदब-

लिफ़ाफ़ः

साहब चीफ़ इन्स्पेक्टर पोस्ट आफ़िस अवध के लिखने से जनाब डैरेक्टर साहब बहादुर को मालूम हुआ कि ख़तों के लिफ़ाफ़े करने में और अलक़ाब लिखने में ऐसी लापरवाही और बेज़ाब्तगी होती है कि अफ़सरान् डाक को बड़ी तकलीफ़ होती है और लोगों को भी बहुत ईज़ा होती है

यह बातें याद रखना चाहिये अ-
व्वल जो ख़त आध तोल: से कम
होता है उस में आध आने का टिक-
ट काफ़ी होता है और अगर मह-
सूल न दिया हो तो जिस के नाम
ख़त है उस को उस का एक आना
देना पड़ता है ॥

३ अगर मकतूब अलेः किसी बड़े
शहर में रहता हो तो वह मुहल्ला
और सड़क जहाँ वह रहता हो
और उस के मकान का नम्बर
और उस शहर का नाम यह ।
सब लिख देना चाहिये ॥

टिकट लगा दिया
बख़्तिसाल राजनारायण सिंह
फूल गाँव
परगनः तुलसीपुर
ज़िले रायबरेली
टिकट

मुल्ली निज़ामुद्दीन
नवाब का पुल
लखनऊ
महसूल दिया गया
टिकट

दोम चाहिये कि ख़त की एक तर्फ़
पता लिखा जाय और दूसरी तर्फ़
से बन्द किया जाय उस तर्फ़ कुछ
न लिखा जाय ॥

मोहर

४ अगर जिस के नाम ख़त लिखा
जाय वह अपने किसी दोस्त के
साथ रहता हो और वह वहाँ का
रहने वाला हो जहाँ ख़त भेजा
जाता है तो उस दोस्त का नाम
लिखना चाहिये ॥

टिकट लगा दिया
पंडित जगन्नाथ प्रसाद
तर्फ़ पंडित गोपालदत्त
गोंडा
लखनऊ
टिकट

नाम	अंक	अंक	अंक	नाम	अंक	अंक	अंक
एक	१	१	1	छब्बीस	२६	२६	26
दो	२	२	2	सताईस	२७	२७	27
तीन	३	३	3	अट्ठाईस	२८	२८	28
चार	४	४	4	उन्नीस	२९	२९	29
पांच	५	५	5	तीस	३०	३०	30
छः	६	६	6	इकत्तीस	३१	३१	31
सात	७	७	7	बत्तीस	३२	३२	32
आठ	८	८	8	तेंतीस	३३	३३	33
नौ	९	९	9	चौंतीस	३४	३४	34
दस	१०	१०	10	पैंतीस	३५	३५	35
ग्यारह	११	११	11	छत्तीस	३६	३६	36
बारह	१२	१२	12	सैंतीस	३७	३७	37
तेरह	१३	१३	13	अड़तीस	३८	३८	38
चौदह	१४	१४	14	उन्तालीस	३९	३९	39
पन्द्रः	१५	१५	15	चालीस	४०	४०	40
सोलह	१६	१६	16	इकतालीस	४१	४१	41
सत्रह	१७	१७	17	बयालीस	४२	४२	42
अठारह	१८	१८	18	तेंतालीस	४३	४३	43
उन्नीस	१९	१९	19	चवालीस	४४	४४	44
बीस	२०	२०	20	पैंतालीस	४५	४५	45
इक्कीस	२१	२१	21	छियालीस	४६	४६	46
बाईस	२२	२२	22	सैंतालीस	४७	४७	47
तेईस	२३	२३	23	अड़तालीस	४८	४८	48
चौबीस	२४	२४	24	उन्चास	४९	४९	49
पच्चीस	२५	२५	25	पचास	५०	५०	50

नाम अंकाक्षर	सूरत उर्दू	सूरत हिंदी	सूरत अंग्रेजी	नाम अंकाक्षर	सूरत उर्दू	सूरत हिंदी	सूरत अंग्रेजी
इक्यावन	۵۱	५१	51	छिहत्तर	۷۶	७६	76
बावन	۵۲	५२	52	सत्तहत्तर	۷۷	७७	77
त्रेपन	۵۳	५३	53	अठहत्तर	۷۸	७८	78
चौवन	۵۴	५४	54	उन्नासी	۷۹	७९	79
पचपन	۵۵	५५	55	अस्सी	۸۰	८०	80
छप्पन	۵۶	५६	56	इक्यासी	۸۱	८१	81
सत्तावन	۵۷	५७	57	बयासी	۸۲	८२	82
अट्ठावन	۵۸	५८	58	तिरासी	۸۳	८३	83
उनसठ	۵۹	५९	59	चौरासी	۸۴	८४	84
साठ	۶۰	६०	60	पचासी	۸۵	८५	85
इकसठ	۶۱	६१	61	छियासी	۸۶	८६	86
बासठ	۶۲	६२	62	सत्तासी	۸۷	८७	87
त्रेसठ	۶۳	६३	63	अट्ठासी	۸۸	८८	88
चौंसठ	۶۴	६४	64	नवासी	۸۹	८९	89
पैंसठ	۶۵	६५	65	नब्बे	۹۰	९०	90
छाछठ	۶۶	६६	66	इक्यानबे	۹۱	९१	91
सरसठ	۶۷	६७	67	बानबे	۹۲	९२	92
अरसठ	۶۸	६८	68	तिरानबे	۹۳	९३	93
उनहत्तर	۶۹	६९	69	चौरानबे	۹۴	९४	94
सत्तर	۷۰	७०	70	पंचानबे	۹۵	९५	95
इकहत्तर	۷۱	७१	71	छियानबे	۹۶	९६	96
बहत्तर	۷۲	७२	72	सत्तानबे	۹۷	९७	97
तिहत्तर	۷۳	७३	73	अट्ठानबे	۹۸	९८	98
चौहत्तर	۷۴	७४	74	निन्नानबे	۹۹	९९	99
पचहत्तर	۷۵	७५	75	सौ	۱۰۰	१००	100

मरातिब आदाद

इकाई	१	एक दर्जः के
दहाई	१०	दो दर्जः के
सैकड़ा	१००	तीन दर्जः के
हज़ार	१०००	चार दर्जः के
दसहज़ार	१००००	पांच दर्जः के
लाख	१०००००	छः दर्जः के
दसलाख	१००००००	सात दर्जः के
करोड़	१०००००००	आठ दर्जः के

पहाड़े

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८
४	८	१२	१४	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४
५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०
६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६
७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	७०	७७	८४	९१	९८	१०५	११२
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८
९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०
११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	११०	१२१	१३२	१४३	१५४	१६५	१७६
१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८	१२०	१३२	[illegible]	[illegible]	१६८	१८०	१९२
१३	२६	३९	५२	६५	७८	९१	१०४	११७	१३०	१४३	१५६	१६९	१८२	१९५	२०८
१४	२८	४२	५६	७०	८४	९८	११२	१२६	१४०	१५४	१६८	१८२	१९६	२१०	२२४
१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०
१६	३२	४८	६४	८०	९६	११२	१२८	१४४	१६०	१७६	१९२	२०८	२२४	२४०	२५६

दिन

फ़ारसी नाम	हिन्दी नाम
एक शम्बः	रविवार या इतवार
दो शम्बः	सोमवार
से शम्बः	मंगल
चहार शम्बः	बुध
पंच शम्बः या जुमेरात	बृहस्पति
जुम्मः	शुक्र
हफ़्तः या शम्बः	शनिश्चर

महीने

अरबी नाम	हिन्दी नाम	अंगरेज़ी नाम
मोहर्रम	जेठ	मई
सफ़र	आषाढ़	जून
रबीअ़उल् अव्वल	सावन	जुलाई
रबीअ़उस्सानी	भादो	अगस्त
जमादिउल् अव्वल	क्वार	सितम्बर
जमादिउस्सानी	कार्तिक	अक्तूबर
रजब	अगहन	नोवेम्बर
शाबान	पूस	दिसम्बर
रमज़ान	माघ	जनवरी
शौवाल	फागुन	फ़ेब्रुअरी
ज़ीलक़ाद	चैत	मार्च
ज़िलहिज	वैशाख	अप्रेल